पाठ

विकार का अर्थ होता है– बदलाव। संज्ञा के रूप में लिंग, वचन व कारक के कारण बदलावे नहीं इसलिए इन्हें 'संज्ञा के विकार' कहा जाता है। देखें कि ये बदलाव कैसे आता है?

लड़का खेल रहा है। लड़की खेल रही है। (लिंग के कारण आया बदलाव)

लड़के खेल रहे हैं। (वचन के कारण आया बदलाव)

इस लड़के को खेलने का शौक है। (कारक के कारण आया बदलाव)

आइए, अब संज्ञा के इन विकारों के बारे में विस्तार से जानें–

लिंग (Gender)

मम्मी कुछ बता रही हैं।
पापा उनकी बात सुन रहे हैं।

युवती ने खूब कसरत की।
युवक ने भी खूब व्यायाम किया।

ऊपर दिए गए वाक्यों में मम्मी, युवती और कसरत शब्दों से स्त्री जाति का तथा पापा, युवक और व्यायाम शब्दों से पुरुष जाति का पता चल रहा है। कुछ शब्द पुरुष जाति के होते हैं, तो कुछ स्त्री जाति के। अतः कहा जा सकता है कि–

शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति के होने का पता चलता है, उसे 'लिंग' कहते हैं।

लिंग के भेद

लिंग के दो भेद होते हैं– (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग।

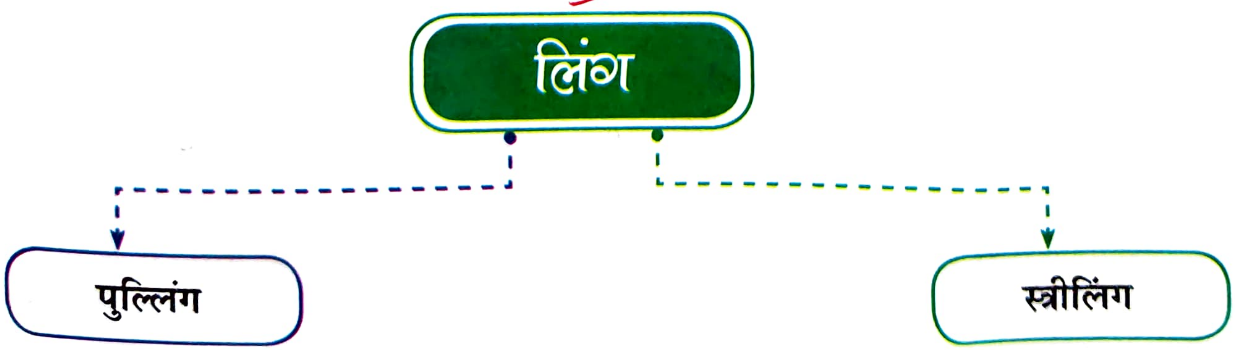

अगर बहुवचन रूप में बिंदी या चंद्रबिंदु आए, तो वह स्त्रीलिंग होगी और अगर वचन बदलने पर ये नहीं आएँ, तो वस्तु पुल्लिंग होगी।

जैसे– तारा-तारे, पत्ता-पत्ते, दरवाज़ा-दरवाज़े, फल-फल, पेड़-पेड़ आदि ये सभी शब्द बिंदी नहीं आने के कारण पुल्लिंग हैं। इसके विपरीत सड़क-सड़कें, मेज़-मेज़ें, कविता-कविताएँ, कहानी-कहानियाँ आदि ये सभी शब्द बिंदी या चंद्रबिंदु आने के कारण स्त्रीलिंग हैं।

आइए, इस नियम द्वारा इन निर्जीव वस्तुओं के लिंग की पहचान करें–

जूता – जूते	(बिंदी नहीं आई)	पुल्लिंग	रस्सी – रस्सियाँ	(चंद्रबिंदु आया)	स्त्रीलिंग
पन्ना – पन्ने	(बिंदी नहीं आई)	पुल्लिंग	लहर – लहरें	(बिंदी आई)	स्त्रीलिंग

शिक्षण-संकेत– बच्चों को कक्षा की निर्जीव वस्तुओं के लिंग इस नियम के द्वारा पहचानने के लिए प्रेरित करें।

पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग रूप में बदलने के कुछ नियम

'आ' जोड़कर	सुत – सुता	छात्र – छात्रा	आचार्य – आचार्या
'ई' जोड़कर	देव – देवी	हिरन – हिरनी	पुत्र – पुत्री
'इया' जोड़कर	बूढ़ा – बुढ़िया	कुत्ता – कुतिया	लोटा – लुटिया
'नी' जोड़कर	शेर – शेरनी	सिंह – सिंहनी	मोर – मोरनी
'आइन' जोड़कर	पंडित – पंडिताइन	ठाकुर – ठकुराइन	लाला – ललाइन
'आनी / आणी' जोड़कर	सेठ – सेठानी	नौकर – नौकरानी	क्षत्रिय – क्षत्राणी
'इका' जोड़कर	गायक – गायिका	नायक – नायिका	अध्यापक – अध्यापिका
'इन' जोड़कर	सुनार – सुनारिन	भिखारी – भिखारिन	मौलवी – मौलविन
'मान के स्थान पर मती' जोड़कर	श्रीमान – श्रीमती	आयुष्मान – आयुष्मती	बुद्धिमान – बुद्धिमती
'वान के स्थान पर वती' जोड़कर	बलवान – बलवती	गुणवान – गुणवती	भगवान – भगवती

नित्य पुल्लिंग शब्दों में 'मादा' तथा नित्य स्त्रीलिंग शब्दों में 'नर' जोड़कर			
भालू – मादा भालू	मच्छर – मादा मच्छर	मछली – नर मछली	मक्खी – नर मक्खी

कुछ शब्द इन नियमों से अलग भी बदले जाते हैं; जैसे–

पति – पत्नी	नेता – नेत्री	सम्राट – सम्राज्ञी	विद्वान – विदुषी	साधु – साध्वी
बैल – गाय	वर – वधू	वीर – वीरांगना	दाता – दात्री	युवक – युवती

विशेष जानकारी

1. कुछ पदवाची शब्द पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग रूप में एक समान प्रयोग किए जाते हैं; जैसे– रा प्रधानमंत्री, इंजीनियर, खिलाड़ी, डॉक्टर आदि।
2. दिनों, महीनों, पेड़ों, पहाड़ों, ग्रहों, देशों, राज्यों, समुद्रों आदि के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं। अप इमली (पेड़), पृथ्वी (ग्रह), श्रीलंका (देश) आदि।
3. भाषा, नदियों, तिथियों, बोलियों व लिपियों आदि के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। **अपवाद–** ब्र (नदी)।

लिंग संबंधी प्रमुख अशुद्धियाँ

1. स्त्रीलिंग शब्दों के साथ पुल्लिंग की क्रिया लगाकर बोलना; जैसे– मैम, आज आप क्या प मम्मी, आज आप क्या खिलाएँगे? जबकि यहाँ 'पढ़ाएँगी और खिलाएँगी' का प्रयोग शुद्ध
2. निर्जीव वस्तुओं में लिंग की सही पहचान न होने से सबसे अधिक अशुद्धियाँ होती हैं; जैसे पाठ बहुत अच्छी है। अपना पुस्तक बाहर निकालो। शुद्ध रूप– यह पाठ बहुत अच्छा है। पुस्तक बाहर निकालो।

पाठ एक नज़र में

- शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री या पुरुष जाति के होने का पता चले, उसे लिंग कहते
- लिंग दो प्रकार के होते हैं– पुल्लिंग व स्त्रीलिंग।
- मच्छर, कॉकरोच, खटमल जैसे शब्द सदैव पुल्लिंग में प्रयोग किए जाते हैं, इसलिए इन्हें 'नि पुल्लिंग' शब्द कहते हैं, जबकि मछली, लोमड़ी, मक्खी आदि शब्द सदैव स्त्रीलिंग में प्र किए जाने के कारण 'नित्य स्त्रीलिंग' कहलाते हैं।
- निर्जीव वस्तुओं के लिंग की पहचान उसके बहुवचन रूप में बिंदी या चंद्रबिंदु के